ऊंची वदाई (१७०)

भग़वान खां भी वद़ी सन्तिन वद़ाई। वेद पुराणिन भरे भरे ग़ाई।। भग़वानु सुठा सुठा सेवक संवारे भग़तु थो पापियुनि तापियुनि तारे हिते हुते थियनि था सन्त सहाई।१।।

दुष्टिन संहार लाइ प्रगटु थिये थो हरी नीचिन खे ऊंचो किन भक्त कृपा में ढरी हरीअ सेवा जी तिनि लग़िन आ लगाई ।।२।।

भग़ित जो फलु द़िये कृपा मां भगुवानु भगृित सेखारिनि सा सन्त करे सावधान जीव हितु चाहिनि सन्त था सदाई ।।३।।

रतन कढिया प्रभू अ सागरु विलोड़े सन्तिन कढियो आ प्रेमु वेदिन निचोड़े सन्तिन सिरताजु असां जो आ साई ।।४।।